

लघु उद्योग सेवा संस्था में एक चार मास का पूर्णकालिक पाठ्यक्रम आयोजित किया गया था जो 1 नवम्बर, 1968 को प्रारम्भ हुआ और 28 फरवरी, 1969 को समाप्त हुआ। इस में कुल 58 इंजीनियरों को प्रशिक्षण दिया गया। शिक्षा मन्त्रालय ने उस पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले प्रत्येक स्नातक इंजीनियर को 250 रुपये प्रतिमास तथा 150 रुपये प्रतिमास डिप्लोमा धारी इंजीनियर को वृत्ति दी।

- (3) शिक्षा मन्त्रालय ने 1949-50 में एक व्यावहारिक प्रशिक्षण पृष्ठ की योजना प्रारम्भ की जिस का उद्देश्य तकनीकी संस्थाओं से शिक्षा प्राप्त स्नातकों तथा डिप्लोमा धारी इंजीनियरों की आवश्यक व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था ताकि वे लाभकारी आजीविका प्राप्त कर सकें। इंजीनियरी तथा तकनालोजी के स्नातकों तथा डिप्लोमा धारियों को क्रमशः 250 रुपये प्रति मास 150 रुपये प्रतिमास आजीविका वृत्ति प्रदान की जाती है। प्रशिक्षण सामान्यतः 1 वर्ष का होता है।

- (4) इंजीनियरों, कौरीगरों तथा तकनीकी योग्यता प्राप्त उद्यमियों को लघु उद्योग स्थापना के लिए वित्तीय सहायता नामक एक योजना तैयार की गई है और उसे राज्य सरकारों को "भादर्श योजना" के रूप में भेजा गया है ताकि वे इसे अपने राज्य क्षेत्र में सहायतायुक्त स्वीकार करें।

श्री बैरणी शंकर शर्मा :

श्री दी० चं० शर्मा :

क्या औद्योगिक विकास, आन्तरिक व्यापार तथा समवाय-कार्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या चौथी पंचवर्षीय योजना में हाई प्रेशर (उच्च दाब वाले) उपकरण तथा हैथी ड्यूटी कम्प्रेसर बनाने के बारे में कोई योजना बनाई गई है ?

(ख) क्या उससे देश की सारी आवश्यकता पूरी हो जायेगी ; और

(ग) यदि हाँ, तो तत्सम्बन्धी व्यौरा क्या है ?

औद्योगिक विकास, आन्तरिक व्यापार तथा समवाय-कार्य मंत्री (श्री फलकडीन अली अहमद) : (क) से (ग). सरकार ने भारी कम्प्रेसरों और विशेष पम्पों का निर्माण करने के लिए जिनकी आवश्यकता उर्वरक उद्योग, रसायन और पेट्रोरसायन संयंत्रों तथा इस्पात संयंत्रों को पड़ती है, सरकारी क्षेत्र में एक परियोजना स्थापित करने का निश्चय किया है। पम्प और कम्प्रेसर बनाने के लिए देश में उपलब्ध विद्यमान उत्पादन सुविधाओं और क्षमता को ध्यान में रखते हुए तथा चौथी पंचवर्षीय योजना की अवधि में इनकी संभावित आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस परियोजना की क्षमता 6,000 मी० टन प्रतिवर्ष निश्चित करने का निर्णय किया है इस परियोजना में उसी किस्म के पम्पों और कम्प्रेसरों का निर्माण करने का विचार है जिनका इस समय देश में निर्माण नहीं हो रहा है तथा वे सभी वस्तुएं, जिनके विकास और उत्पादन के लिए गैर-सरकारी क्षेत्र में रुचि दिखाई है, इसके निर्माण कार्यक्रम से निकाल दी गई हैं ; इस परियोजना में लगभग 10.68 करोड़ रुपये लागत घाने का अनुमान है। जिसमें मोटे तौर से 1 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा का व्यय भी सम्मिलित है। अंतिम उत्पादन लगभग 10.8 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष का होगा। इसके

हाई प्रेशर (उच्च दाब वाले) उपकरणों तथा हैथी ड्यूटी कम्प्रेसरों का निर्माण

*554. श्री महाराज सिंह भारती :
श्री महापात्र सिंह :

प्रतिरिक्त, 1 करोड़ रुपये की व्यवस्था बस्ती निर्माण के लिए की गई है। इस प्रकार कुल अनुमानित लागत 11.68 करोड़ रुपये हो जायेगी।

**Export of Car Components by M/s.
Hindustan Motors**

*555. SHRI R. K. SINHA : Will the Minister of INDUSTRIAL DEVELOPMENT, INTERNAL TRADE AND COMPANY AFFAIRS be pleased to state :

(a) whether Hindustan Motors are exploring the possibilities of exporting car components ;

(b) if so, whether the exports would not hit the automobile production in the country ;

(c) the estimated foreign exchange earned through the exports ; and

(d) the quantity of foreign exchange spent on importing auto spares etc.

THE MINISTER OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT, INTERNAL TRADE AND COMPANY AFFAIRS (SHRI F. A. AHMED) : (a) to (c). M/s. Hindustan Motors have only indicated so far that they are exploring with their collaborators, the possibilities of exporting automobile components, including car components. No specific proposals have been received so far from them. There is no reason to apprehend that such exports would hit automobile production in the country. For one thing, there is at present considerable spare capacity in Hindustan Motors on account of very low volume of production of commercial vehicles, and for another, the precise volume of exports is yet to be known. For the same reason, no estimate is possible at this stage of the earnings of foreign exchange through such exports.

(d) The amount of foreign exchange sanctioned to the automobile manufacturers during the year 1968-69 for import of motor vehicle parts is Rs. 2.5 crores.

Hindustan Steel Limited

*556. SHRI SITARAM KESRI : Will the Minister of STEEL AND HEAVY ENGINEERING be pleased to state :

(a) the amount of subsidy given to the

Hindustan Steel Ltd. during the years 1966-67, 1967-68 and 1968-69 ;

(b) the foreign exchange allowed to the Hindustan Steel Ltd. during the years 1966-67, 1967-68 and 1968-69 ;

(c) the foreign exchange earned by the Hindustan Steel Ltd. during the last three years by exports of steel etc. ;

(d) whether the Hindustan Steel Ltd. has achieved its targets of production ; and

(e) if not, the reasons therefor ?

THE MINISTER OF STEEL AND HEAVY ENGINEERING (SHRI C. M. POONACHA) : (a) The amount of subsidy which accrued to HSL on exports amounted to Rs. 1 million in 1966-67, Rs. 38 million in 1967-68 and to Rs. 35 million during the period from April to December, 1968.

(b) H. S. L. were allowed foreign exchange for imports of spares and raw materials to the extent of Rs. 121.448 million in 1966-67 and Rs. 79.371 million in 1967-68. The information for 1968-69 is not readily available.

(c) The FOB value of exports by HSL during the last three years was Rs. 93 million in 1966-67, Rs. 309 million in 1967-68 and Rs. 331 million during the period from April, 1968 to January, 1969.

(d) and (e). H. S. L. had a programme of production of 1.58 million tonnes of pig iron for sale and 2.726 million tonnes of saleable steel for the year 1968-69. Against this target, actual production is likely to be of the order of 1.116 million tonnes of pig iron and 2.668 million tonnes of saleable steel. The gap is not very significant and is mainly due to much-needed capital repairs to Blast Furnaces, Open Hearth furnaces and some of the mills, labour troubles in Durgapur etc.

Recession in Machine Tool Industry

*557. SHRI CHENGALRAYA
NAIDU :
SHRI P. C. ADICHAN :

Will the Minister of INDUSTRIAL DEVELOPMENT, INTERNAL TRADE AND COMPANY AFFAIRS be pleased to state :

(a) whether it is a fact that the utilization of production capacity in the machine tool industry is ranging between 10 per cent and 80 per cent and at an average of 46 per